Media clippings – Muzaffarpur, 26th - 27th 2017

1) **Dainik Jagran**

जागरूकता | स्वच्छ, स्वास्थ्य व समृद्धि कार्यक्रम के तहत कार्यशाला में दी गई कई जानकारी

बड़े उत्पादकों को खुद करना होगा कूड़ा निष्पादन

- कूड़े का निष्पादन नहीं करने पर लगेगा भारी जुर्माना, लाइसेंस रद करने की भी होगी कार्रवाई
- कूड़े के कंपोस्टिंग में मदद करेगा नगर निगम, इसके लिए देना होगा सुविधा शुल्क
- कानून के दायरे में होंगे होटल विवाह भवन और सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठान

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरपुर : कूड़े का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाले होटलों, विवाह भवनों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को अपने यहां उत्पादित कूड़े का स्वयं निष्पादन करना होगा। अन्यथा वे ठोस कचरा प्रबंधन अधिनियम 2016 के तहत कार्रवाई के दायरे में होंगे। अपने यहां उत्पादित कूड़े का निष्पादन नहीं करने पर न सिर्फ उनको भारी जुर्माना भरना पड़ेगा, बल्कि उनका लाइसेंस भी रद किया जाएगा।

उक्त बातें शुक्रवार को माड़ीपुर स्थित एक होटल के सभागार में स्वच्छता, स्वास्थ व समृद्धि कार्यक्रम के तहत आयोजित कार्यशाला में कही गईं। कार्यशाला का आयोजन सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरनमेंट (सीएसई), इंडियन टोबैको कंपनी (आइटीसी) एवं नगर निगम द्वारा किया गया था। इसमें शहर के होटलों, रेस्तरां, विवाह भवनों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के संचालकों व स्वयंसेवी संस्था के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सीएसई के डिप्टी डायरेक्टर जनरल चंद्रभूषण ने कहा कि शहर को कचरा मुक्त बनाना है और इसके लिए सभी को वेस्ट मैनेजमेंट पर ध्यान देना होगा। कचरे से खाद बनाकर वे लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने कहा यदि वे उत्पादित कचरे के निष्पादन में परेशानी महसूस करते हैं तो योजना के तहत तैयार किए जा रहे कंपोस्टिंग सेंटरों में से एक लेकर उसका लाभ उठा सकते हैं, लेकिन उनको इसके लिए वहां का सारा खर्च उठाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि जुलाई तक सिटी बाइलॉज फॉर वेस्ट मैनेजमेंट तैयार कर लिया जाएगा और उसी के तहत जुर्माना एवं सुविधा शुल्क की राशि तय की जाएगी। आइटीसी के जीएम जीए मूर्थी ने कार्यशाला में कचरा प्रबंधन की जानकारी दी। इस अवसर पर प्रोग्राम मैनेजर स्वाति सिंह संब्याल ने बताया कि अभी पांच वार्डों में एट सोर्स सेग्रगेशन कार्य चल रहा है। जुलाई एवं अगस्त के बीच आधे शहर में इस योजना को शुरू कर दी जाएगी। कार्यक्रम के तहत बाजार में हर 50 दुकान पर सौ किग्रा क्षमता का कूड़ादान रखा जाएगा। आधा किमी पर दो बड़े डस्टबीन रखे जाएंगे, जिसमें से एक रसायनिक कचरे के लिए अलग से होगा। कूड़ा निष्पादन को वार्डवार एक्शन प्लान तैयार किया जा रहा है। आम लोगों को कूड़े से कंपोस्ट व बायोगैस तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा। डंप साइड की मैपिंग तैयार की गई है। पोखर व झील में डंप कूड़े को हटाया जाएगा। इसके लिए अभियान चलाया जाएगा। इससे पर्यावरण सुधार में भी मदद मिलेगी। इस अवसर पर सिटी मैनेजर रवीशचंद्र वर्मा, शशि भूषण आदि ने भाग लिया।

स्वच्छता, स्वास्थ व समृद्धि कार्यक्रम के तहत कार्यशाला को संबोधित करती अतिथि

कूड़े से बने खाद से बढ़ेगी खेत की उर्वरा शक्ति

कार्यशाला के दूसरे सत्र में कूड़े से खाद तैयार करने की प्रक्रिया व तैयार खाद से होने वाले लाभ की जानकारी दी गई। इस सत्र में जिला कृषि पदाधिकारी समेत विभिन्न प्रखंडों से आए पदाधिकारियों ने भाग लिया। सीएसइ के वैज्ञानिकों ने बताया कि घरों से निकलने वाले कूड़े से तैयार खाद जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में न सिर्फ उपयोगी है, बल्कि सस्ता व सुलभ भी है। शहर से उत्पादित कचरे से तैयार खाद को किसानों को उपलब्ध कराने पर सहमति बनी।

2) Hindustan, Muzaffarpur

शहर के नागरिकों से कचरा प्रबंधन को वसूला जाएगा शुल्क, नियम तोड़ने पर दंड

कचरा प्रबंधन को नियम जल्द

मुजफ्फरपुर | वरीय संवाददाता

भारत सरकार के ठोस अपशिष्ट प्रबंधन अधिनियम को नगर निगम क्षेत्र में लागू करने के लिए जागरूकता अभियान शुरू हो गया है। शहर में इसको लागू करने के लिए नगर निगम दो माह में अपनी नियमावली बनाएगा। इसके आधार पर नागरिकों से कचरा प्रबंधन का शुल्क भी वसूला जाएगा। नियमों को तोड़ने पर दंड की भी वसूली होगी। ये बातें सेंटर फॉर साइंस के डिप्टी डायरेक्टर जेनरल चंद्रभूषण ने कहीं।

वह शुक्रवार को माड़ीपुर स्थित एक होटल में स्वच्छता, स्वास्थ्य व समृद्धि कार्यक्रम के तहत व्यावसायिक क्षेत्र में कचरा प्रबंधन पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान सीएसई की प्रोग्राम मैनेजर स्वाति सिंह संव्याल ने मुजफ्फरपुर में जारी कचरा प्रबंधन की जानकारी देते हुए बताया कि शहर के पांच वार्ड से निकल रहे कचरे से तीन टन जैविक खाद तैयार करने का कार्य शुरू हो गया है। एक माह भीतर इस अभियान के तहत तैयार जैविक खाद की बिक्री भी शुरू हो जाएगी। इसकी बिक्री के लिए एक एजेंसी से बातचीत भी शुरू हो गई है। वहीं, अगस्त तक आधे शहर से सूखा व गीला कचरा अलग-अलग एकत्र होने लगेगा।

कार्यशाला में होटल व विवाह भवन के संचालक, कैटरिंग एजेंसी, निजी अस्पताल व नर्सिंग होम संचालक एवं बड़े स्तर पर कचरे निकालने वाली एजेंसियों को अधिनियम के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्हें अपने स्तर पर कचरा प्रबंधन की व्यवस्था करने की भी जानकारियां दी गई।

बताया गया कि तीन माह के बाद उन्हें स्वयं इस काम के लिए आने होगा। अन्यथा इसके लिए सर्विस चार्ज चुकाना होगा। सड़क पर कचरा डालने पर उन्हें दंड भी देना होगा।

डब्ल्यूओडब्ल्यू नामक संस्था की ओर से हिस्सा ले रहे कचरा प्रबंधन के विशेषज्ञ जीएम मूर्ति ने बताया कि इसके लिए मुजफ्फरपुर का जीआईएस मैप सर्वे कराया जा रहा है। इससे शहर में कहां-कहां सड़क के किनारे कचरा डंप किया जा रहा है। कचरे से शहर के कौन-कौन पोखर, तालाब या मन को भर दिया गया है। इसकी असलियत सामने आ जाएगी। फिर इसी आधार पर इसकी सफाई कर इसका सौंदर्यीकरण किया जाएगा। उधर, दूसरे सत्र में जैविक खाद उत्पादकों के साथ कचरा प्रबंधन पर चर्चा हुई।

माड़ीपुर रोड स्थित एक रेस्टोरेंट में शुक्रवार को कचरा प्रबंधन पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेते अधिकारी व अन्य।

कार्यशाला

- माड़ीपुर स्थित एक होटल में हुई कार्यशाला में तैयार की गई रणनीति, नई नीति पर चर्चा
- शहर में कचरा प्रबंधन को जागरूकता अभियान चलाने पर भी दिया जोर
- ज्यादा कचरा निकालने वाली एजेंसियों को अपने स्तर पर करनी होगी प्रबंधन की व्यवस्था

माड़ीपुर स्थित एक रेस्टोरेंट में शुक्रवार को आयोजित कार्यशाला में अपनी बात रखते सेंटर फॉर साइंस के डिप्टी डायरेक्टर जेनरल चंद्रभूषण व अन्य। • हिन्दुस्तान

सफाई को लेकर बनी कार्ययोजना

- शहर में प्रत्येक 50 दुकान पर 100 किलो की क्षमता वाला कूड़ादान रखा जाएगा
- हर वार्ड में प्रत्येक आधा किमी पर रखे जाएंगे काले रंग के दो बड़े डस्टबिन
- वार्ड स्तर पर कूड़ा प्रबंधन के लिए नगर निगम की ओर से बनेगा एक्शन प्लान
- बड़े स्तर पर कचरा निकालने वाली एजेंसियों को जैविक खाद व बायोगैस की मिलेगी ट्रेनिंग
- पोखर, तालाब व मन की सफाई के लिए जल्द शुरू होगी पहल

3) Prabhat Khabar

प्रभात खबर

कार्यशाला. माड़ीपुर के होटल में आयोजन

सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स जुलाई से लागू

संवाददाता ▸ मुजफ्फरपुर

कचरा आज हम सभी के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आया है, लेकिन इससे निबटना आसान है. बस हमें अपनी आदतों में बदलाव में लाने की जरूरत है. इसके बाद हम ठोस कचरा प्रबंधन कर सकते हैं. उक्त बातें सीएसइ के उप निदेशक चंद्र भूषण ने शुक्रवार को माड़ीपुर स्थित एक होटल के सभागार में ठोस कचरा प्रबंधन पर आयोजित कार्यशाला में कहीं.

उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने ठोस कचरा प्रबंधन को लेकर सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट रूल्स बनाया है, जो एक माह बाद निगम बोर्ड से पास कर यहां लागू होगा. इसमें कॉमर्शियल सेंटर जहां से अधिक कचरा निकलता है, उनकी अलग से जिम्मेदारी तय की गयी है. इसमें वे खुद से अपने कचरे को सेग्रीगेट करेंगे. अगर यह सुविधा उनके पास नहीं है, तो वे गीला, सूखा व केमिकल कचरा अलग-अलग कर रखें, जिसे नगर निगम हटायेगा. लेकिन इसके लिए उन्हें कुछ शुल्क देना होगा, जो कचरे की मात्रा के मुताबिक 1500 से 2500 रुपये के बीच होगा. वहीं प्रत्येक हाउस होल्ड को इसके लिए 50 रुपये शुल्क देना होगा. सड़क पर कचरा फेंकने पर जुर्माना लगेगा.

सीएसइ की प्रोग्राम मैनेजर स्वाती सिंह सांब्याल ने प्रोजेक्टर के माध्यम से शहर के पांच वार्डों में चल रहे कचरा ट्रीटमेंट के बारे में जानकारी दी. इसमें बताया कि एमआरडीए कार्यालय में गीले कचरे से खाद बनाने का पिट बन चुका है. यहां रोज तीन टन गीला कचरा को पिट में डाला जा रहा है. भविष्य में इन पिटों की संख्या बढ़ेगी. बैठक में आइटीसी के जीएम जीएन मूर्थी, सीएसइ के एसबी पंडित, सिटी मैनेजर रविशचंद्र वर्मा, वरीय टैक्स दारोगा अशोक कुमार सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे.

बेला में केमिकल कचरे का होता है डिस्पोजल. बेला फेज टू में नर्सिंग होम से निकलने वाले केमिकल व मेडिकल कचरे का डिस्पोजल होता है. कंपनी के प्रतिनिधि राजीव कुमार ने बताया कि सरकारी अस्पतालों के अलावा 106 नर्सिंग होम यहां कचरा भेजते हैं. शहर में करीब 277 छोटे-बड़े निजी नर्सिंग होम हैं. अगर एक जगह सभी कचरा मुहैया कराया जाये, तो हम उसे खरीद लेंगे.

नगर निगम काम नहीं करता. कार्यशाला में सिंधि सेवा समिति के सचिव अमित कुमार ने कहा कि नगर निगम इस काम में फिसड्डी है. कहते तो बहुत कुछ हैं, लेकिन कोई काम नहीं होता. समिति के सुजीत चौधरी ने बताया कि प्लान तो सही है, लेकिन इसके बारे में लोगों को जानकारी दी जाये. वहीं दीपक पोद्दार ने कहा कि यहां छोटे-छोटे काम के लिए निगम की खुशामद करनी होती है. साल में दो बार छिड़काव होता है, जो सप्ताह में दो-तीन दिन होना चाहिए. फॉगिंग नहीं होती. इस पर सिटी मैनेजर रविशचंद्र वर्मा ने कहा कि प्रत्येक 50 दुकान पर 100 केजी का डस्टबिन रखा जायेगा. इसके अलावा हर आधा किमी पर दो डस्टबिन रखे जायेंगे. एक सूखा व एक केमिकल कचरे के लिए. 300 रिक्शा खरीदने की तैयारी है. इन सभी के लिए प्रक्रिया चल रही है. वरीय टैक्स दारोगा अशोक सिंह ने कहा कि अबतक 25 हजार डस्टबिन बांटे जा चुके हैं. 50 हजार का टेंडर हो चुका है. सभी हाउस होल्ड को दो डस्टबिन दिये जायेंगे. जिस मकान में चार परिवार रहते हैं, वहां सभी परिवार को अलग-अलग यह सुविधा मिलेगी.

आदत में बदलाव से होगा कचरा प्रबंधन

- नगर निगम बोर्ड की बैठक में पास होने पर लागू होगा नियम
- गीले कचरे से खाद व बायोगैस बनाने का दिया जायेगा प्रशिक्षण
- नदी, तालाब, पोखर, झील किनारे का हटेगा कचरा
- कचरे से भरे पोखरों को जीवंत किया जायेगा

कचरा प्रबंधन पर कार्यशाला को संबोधित करते चंद्रभूषण.

जुलाई तक शहर के 30 वार्डों में शुरू होगा काम

सीएसइ के चंद्र भूषण ने बताया कि जुलाई तक शहर के 30 वार्डों में कचरा प्रबंधन का काम शुरू हो जायेगा. अभी पांच वार्डों में यह काम चल रहा है, जहां लोगों का सपोर्ट पूरा मिला है. इसी तरह सहयोग मिलता रहा, तो साल के अंत तक पूरे शहर में ठोस कचरा प्रबंधन को हम पूरी तरह लागू कर पायेंगे. अभी हम तीन टन गीला कचरा रोज कंपोस्ट के लिए डाल रहे हैं. भविष्य में यह 70 से 80 टन होगा. नगर निगम जल्द ही 300 रिक्शा लाने जा रहा है ताकि तेजी से इस काम को किया जा सके. शहर के सभी कूड़ा डंपिंग प्वाइंट का जीआइएस पर मैपिंग किया जा चुका है. सब्जी व फूल मंडी के पास ही ट्रिटमेंट की सुविधा बनाने की योजना है. हर एक क्षेत्र में नया एक्शन प्लान बनेगा. अभी हमारी छह सदस्यीय टीम 40 वॉलंटियर के साथ काम कर रही है, एक माह बाद 150 वॉलंटियर इस काम में लगेंगे. साल के अंत तक कचरे की व्यवस्था सेटल हो जायेगी.

4) Dainik Bhaskar

चिन्ता की बात सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट ने स्वच्छता में पिछड़े शहर का पेश किया भयावह आंकड़ा

घरों से रोज निकल रहा 3.5 करोड़ लीटर गंदा पानी और 170 टन कूड़ा शहर को बना रहा है बीमार

एमडीडीएम कॉलेज में हुए सेमिनार में बढ़ते प्रदूषण को लेकर किया आगाह

सिटी रिपोर्टर | मुजफ्फरपुर

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट, दिल्ली के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. चंद्रभूषण ने आगाह किया कि यदि स्वच्छता को लेकर हमलोग सचेत नहीं हुए तो आने वाले समय में कुछ भी नहीं बचेगा। प्रदूषण को लेकर देश व शहर का जो आंकड़ा उन्होंने प्रस्तुत किया, चौंकाने वाला था। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार शहर में रोज 170 टन कूड़ा निकलता है। इसमें 90 फीसदी मिक्स कूड़ा(गिला व सूखा) होता है, जो बिना अलग किए सड़कों पर फेंक दिया जाता है। वहीं, रोजाना शहर के घरों से 3.60 करोड़ लीटर गंदा पानी निकलता है, जिसके ट्रीटमेंट की कोई व्यवस्था नहीं है। यह प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण है। ये हालात शहर को बीमार बना रहे हैं। शनिवार को वे एमडीडीएम कॉलेज में स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं समृद्धि कार्यक्रम के तहत सेनिटेशन व सेग्रीगेशन एट सोर्स पर आयोजित सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। डॉ. चंद्रभूषण ने कहा कि यही वजह है कि हाल के एक स्वास्थ्य सर्वे में 600 शहरों में मुजफ्फरपुर को 523वां स्थान मिला है। बताया गया कि स्वच्छता की शुरुआत हम अपने घर, स्कूल और कॉलेज से कर सकते हैं। इसके लिए गिला कचरा को अलग कर घर में खाद तैयार किया जा सकता है। इस दौरान कूड़ा ट्रीटमेंट पर काम रही आईटीसी के जीएन मुरथी की टीम ने कंपोस्टिंग की जानकारी दी। इससे पहले कॉलेज की प्राचार्या ममता रानी ने टीम का स्वागत किया। साथ ही स्वच्छता अभियान में सहयोग करने का भरोसा दिया। इस दौरान सिटी मैनेजर, सीएसई की प्रोजेक्ट हेड स्वाति सिंह सहित कई लोग मौजूद थे।

एमडीडीएम कॉलेज में सिटी सैनिटेशन पर आयोजित सेमिनार में जुटे शिक्षक छात्राएं व अन्य।

प्रदूषण पर सीएसई की रिपोर्ट

राष्ट्रीय स्तर का आंकड़ा

- देश में कुल 445 नदियां हैं, इनमें से 300 नदियों में प्रदूषण के कारण लोग स्नान नहीं कर सकते
- 80 फीसदी नदियां घरों व शहर से निकलने वाले गंदगी से प्रदूषित होती हैं
- 31 फीसदी नदियों के गंदे पानी का ट्रीटमेंट हो पाता है
- भारत में प्रतिदिन डेढ़ लाख टन कूड़ा जेनरेट होता है, पर महज 23 फीसदी का ही ट्रीटमेंट हो पाता है
- प्रदूषण से प्रति वर्ष 5 लाख लोगों की मौत, इसमें एक साल से कम उम्र के बच्चे अधिक

मुजफ्फरपुर शहर के आंकड़े

- शहर में रोज 170 टन कूड़ा निकलता है, 90 फीसदी मिक्स कूड़ा सड़कों पर फेंका जाता है
- एक आदमी रोज 300 ग्राम कूड़ा निकालता है और साल में 100 किलो
- महज 60 फीसदी कूड़े ही समय पर होता है उठाव
- शहर में 3.60 करोड़ लीटर नाले का दूषित पानी बहता है
- स्वास्थ्य मामले में देशभर में शहर 523वें स्थान पर।

5) Hindustan

प्रतिदिन डेढ़ लाख टन कूड़ा बहाया जाता नाले में

मुजफ्फरपुर | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

हमारे देश में 450 में से 300 नदियां प्रदूषित हैं। 80 प्रतिशत हमारे कारण और 20 प्रतिशत फैक्ट्रियों के कारण प्रदूषित होती हैं। भारत में प्रतिदिन डेढ़ लाख टन कूड़े का बहाव नाले में होता है। ये बातें दिल्ली से पहुंचे सीएसई के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. चन्द्रभूषण ने कही। वे शनिवार को एमडीडीएम कॉलेज के गृह विभाग में 'कचरा की छंटनी' विषय पर आयोजित सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रतिवर्ष पांच लाख लोग प्रदूषण के कारण काल के गाल में समा जाते हैं। यह आंकड़ा नेशनल सैम्पल सर्वे ऑर्गेनाइजेशन का है जो बहुत ही चिंता का विषय है। इसमें जागरूकता ही बचाव है।

सड़क पर कूड़ा फेंके न उसे जलाएं: उन्होंने कहा कि कचरे का सही प्रबंधन हमारे जीवन को प्रभावित करता है।

सेमिनार

- एमडीडीएम कॉलेज के गृहविज्ञान विभाग में सेमिनार आर्याजित
- कचरा प्रबंधन के बारे में छात्राओं को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

कूड़ेदान का सही तरीके से प्रयोग कर हम कचरे का निपटारा कर सकते हैं। प्राकृतिक तरीके से सड़नशील कूड़े को हरे कूड़ेदान में डालें।

प्राकृतिक रूप नष्ट नहीं होने वाले और रीसायकल योग्य सूखे कूड़े लाल डिब्बे में डालें। घरेलू हानिकारक कचरे जैसे की कीटनाशक, बैटरी प्रसाधन सामग्री, बेकार हो चुकी दवा, सजावट आदि बिल्कुल अलग रखें। छांटे गए कचरे को नगर निगम के सफाई कर्मचारियों को ही सौंपे। कचरे को बारिश के पानी या नाले में नहीं फेंके। सड़क पर कूड़ा फेंके न उसे जलाएं।

शनिवार को एमडीडीएम कॉलेज में आयोजित सेमिनार में शामिल शिक्षिका व छात्राएं।

हमारे जीवन में सफाई बहुत महत्वपूर्ण

प्राचार्या डॉ. ममता रानी ने कहा कि हमारे जीवन में सफाई का बहुत महत्व है। जिस तरह हम अपने तन को साफ और सुंदर रखते हैं उसी प्रकार तन और मन की सेहत के लिए कचरा प्रबंधन खास है। इसे अपनायें। संचालन और विषय प्रवेश गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. सुशीला सिंह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नीलम कुमारी ने किया। मौके पर डॉ. कुसुम कुमारी, डॉ. नीता शर्मा, डॉ. चंचल चरण, डॉ. संध्या रानी, डॉ. निशी रानी, डॉ. जयश्री, डॉ. अनिता, मोमिता व मंजूला रानी भी थीं।

6) **Dainik Jagran**

प्रदूषण की मार, हर साल पांच लाख शिकार

एमडीडीएम में 'सेनिटेशन एंड सेग्रीगेशन एट सोर्स' पर सेमिनार कचरा प्रबंधन की जानकारी से रूबरू हुईं छात्राएं

जासं, मुजफ्फरपुर : एनएसएसओ (नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन) के मुताबिक हर साल पांच लाख लोग प्रदूषण के कारण काल के गाल में समा जाते हैं। यह बहुत ही चिंता का विषय है। इसका बेहतर उपाय जागरूकता ही बचाव है। ये बातें मुख्य वक्ता दिल्ली से आए सीएसई (सेंटर साइंस एंड इनवायरमेंट) के डिप्टी डायरेक्टर डॉ. चंद्रभूषण ने कहीं। वे शनिवार को एमडीडीएम कॉलेज के गृहविज्ञान विभाग में 'सेनिटेशन एंड सेग्रीगेशन एट सोर्स' विषय पर आयोजित सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने छात्राओं को बताया कि किस प्रकार कचरे का सही प्रबंधन हमारे जीवन को प्रभावित करता है। कूड़ेदान का सही प्रयोग कचरा प्रबंधन में मुख्य भूमिका निभाएगा। प्राकृतिक तरीकों से सड़ने वाले कूड़े को हरे रंग के कूड़ेदान में डालें। प्राकृतिक रूप से नष्ट न होने वाले रीसाइकिल योग्य सूखे कूड़े को लाल डिब्बे में डालें। घरेलू हानिकारक कचरे जैसे कीटनाशक, बैट्री, प्रसाधन सामग्री, बेकार दवाइयां और सजावट आदि के सामान को अलग रखें। छंटे कचरे को नगर निगम के सफाई कर्मियों को ही सौंपे। इसे बारिश के पानी या नाले में नहीं फेंके। न तो सड़क पर कचरा फेंके और न ही जलाएं। प्राचार्य डॉ.ममता रानी ने कहा कि हमारे जीवन में सफाई का बहुत महत्व है। सेहत बनाए रखने के लिए कचरा प्रबंधन हमारे लिए खास है। जब हम स्वच्छ होंगे, तभी समृद्धि हासिल हो सकेगी। संचालन व विषय प्रवेश गृहविज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. सुशीला सिंह, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नीलम कुमारी ने किया। इस अवसर पर डॉ. कुमकुम कुमारी, डॉ. नीता शर्मा, डॉ.चंचल चरण, डॉ. संध्यारानी, डॉ. निशी रानी, डॉ.जयश्री, डॉ.अनिता, मोमिता और मंजूला रानी सहित सैकड़ों छात्राएं उपस्थित थीं।

एमडीडीएम कॉलेज में सेमिनार को संबोधित करतीं प्राचार्य ● जागरण

रोजी-रोटी देने वाली हो शिक्षा : डॉ. गोपी रमण

नीतीश्वर महाविद्यालय में व्याख्यानमाला को संबोधित करते वक्ता व उपस्थित अतिथि ● जागरण

जासं, मुजफ्फरपुर : वर्तमान में समाजशास्त्र को सैद्धांतिक के अलावा व्यावहारिक बनाना आवश्यक है। ये बात एलएन मिथिला विवि के समाजशास्त्र विषय के प्रोफेसर डॉ. गोपी रमण प्रसाद सिंह ने कही। वे शनिवार को महाविद्यालय में आयोजित 'वर्तमान परिवेश में समाजशास्त्र की उपयोगिता' विषय पर आयोजित व्याख्यानमाला में बोल रहे थे। उन्होंने समाजशास्त्र की उत्पत्ति, विकास तथा उसकी उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके तीन आधार वैज्ञानिक क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति एवं औद्योगिक क्रांति के बारे में बताया। कहा कि औद्योगिक क्रांति ने श्रम, मजदूर एवं बाजार को प्रोत्साहित किया। कहा कि ऐसी शिक्षा मिले, जिससे युवाओं को रोजी-रोटी मिल सके। कहा कि समाज में चल रहे कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद सामाजिक हालात में सुधार के कारणों पर रिसर्च की जरूरत है, ताकि सरकारें भी सच जान सकें। पूर्व विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह ने वर्तमान परिवेश में सामाजिक तनाव पर चर्चा की। कहा, हम युद्ध के नाम पर सैनिकों की बलि दे रहे हैं, लेकिन ये नहीं सोचते कि यह वैश्विक क्षति भी है। विभागाध्यक्ष डॉ. रंजना सिन्हा ने कहा कि सामाजिक कार्यों में छात्र-छात्राओं को आगे बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। इस अवसर पर डॉ. विभूति भूषण सिंह, डॉ. कामेश्वर सिंह, डॉ. शिवचंद्र प्रसाद चौधरी व डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह मौजूद थे। सुगंधा, निधि, मणिशेखर, सरिता, रश्मि, किशन आदि छात्र-छात्राएं मौजूद रहीं।

7) **Prabhat Khabar**

स्वास्थ्य-समृद्धि के लिए कचरा प्रबंधन जरूरी

संवाददाता ▸ मुजफ्फरपुर

एमडीडीएम में स्वच्छता, स्वास्थ्य, समृद्धि पर कार्यशाला

- वक्ता बोले, नदियों में 80 प्रतिशत प्रदूषण हमारे कारण, 20 प्रतिशत फैक्टरी से
- कॉलेज प्रबंधन ने दिलाया भरोसा, गीले कचरे को खुद से बनाएंगे कंपोस्ट
- छात्राओं ने लिया संकल्प, कचरा प्रबंधन के लिए समाज को करेंगी जागरूक

पर्यावरण साफ किये बगैर विकास संभव नहीं है. आज जो हमारा पर्यावरण दूषित हो रहा है, खासकर के नदियां, इसका प्रमुख कारण फैक्टरियों से निकलने वाला केमिकल नहीं, बल्कि हमारे-आपके द्वारा उत्पन्न कचरा है. पूरे देश में 445 नदियां हैं. इनमें 300 प्रदूषित हो चुकी हैं. इसमें 80 प्रतिशत प्रदूषण हमारे-आपके कारण, 20 प्रतिशत कारण फैक्टरियां हैं. देश में 38 हजार मिलीयन प्रतिदिन सिवरेज निकलता है. 1.5 लाख टन कचरा प्रतिदिन पैदा हो रहा है, इसमें 23 प्रतिशत का ही ट्रीटमेंट हो रहा है.

उक्त बातें सीएसइ के उप निदेशक डॉ चंद्र भूषण ने एमडीडीएम कॉलेज में शनिवार को ठोस कचरा प्रबंधन पर आयोजित कार्यशाला में कहीं. उन्होंने कॉलेज प्रबंधन को सुझाव दिया कि अभी से अपने संस्थान में कचरा प्रबंधन के तहत गीले कचरे से खाद बनाने का काम शुरू करें.

कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए प्राचार्य डॉ ममता रानी ने कहा कि हमारे जीवन में सफाई का बहुत महत्व है. जिस तरह तन-मन को साफ रखते हैं, उसी तरह सेहत के लिए कचरा प्रबंधन भी जरूरी है. हम स्वच्छ होंगे, तभी स्वस्थ व समृद्ध होंगे. साथ ही भरोसा दिलाया कि वह बहुत जल्द अपने कॉलेज में गीले कचरे के ट्रीटमेंट का काम शुरू करेंगी.

एमडीडीएम कॉलेज की कार्यशाला में मौजूद अतिथि, शिक्षिकाएं व छात्राएं.

प्रदूषण से हर साल मरते हैं पांच लाख लोग

श्री भूषण ने कहा कि नेशनल सैंपल सर्वे का आंकड़ा है कि प्रति वर्ष पांच लाख लोग प्रदूषण से मरते हैं . 1995 में गांव व शहर में बीमारी की स्थिति बराबर थी . लेकिन 2004 में गांव में 88 लोग व शहर में 99 लोग बीमार होते थे . 2014 में गांव में बीमारों की संख्या 79 हो गयी, तो शहर में 118 हो गयी . अपने जिले में यह आंकड़ा 90 से 95 प्रतिशत है . यहां दो तिहाई से अधिक शहर प्रदूषित हैं . रोज अपने शहर में 170 टन कचरा निकलता है, प्रति व्यक्ति रोज 300 ग्राम . इसमें 60 प्रतिशत ही उठता है . स्वास्थ्य में देश में 590 शहरों में जिले का स्थान 523वां है . ऐसे में एक साल से कम उम्र के बच्चों के मरने की संख्या यहां अधिक है . इस सबका एक कारण कचरा है . हम नगर निगम के साथ सहयोग करने आये हैं . आपका शहर है, काम आपको करना होगा . आइटीसी के जीएन मूर्थी ने कहा कि हम 17 शहर में काम कर रहे हैं . अब यहां काम करने आये हैं . आपके सहयोग की जरूरत है . हम संसाधन मुहैया करायेंगे . हम चाहते हैं कि आप अपने कॉलेज के गीले कचरे का कंपोस्ट कॉलेज कैंपस में बनाएं और कॉलेज के बगीचे को सुंदर बनाएं . इस दौरान कॉलेज के इंडस्ट्रीयल माइक्रोबायोलोजी के लेक्चरर रोहित कृष्णा ने कहा कि वह कंपोस्ट बनाने के लिए जिस बैक्टरिया की जरूरत है, वह मुहैया करायेंगे . खाद बनाने में एजेटों-बैक्टर व फॉस्फेट उपलब्ध करायेंगे .

मौके पर आइटीसी के जीएन मूर्थी, एमडीडीएम कॉलेज की प्राचार्य डॉ ममता रानी, डॉ नीलम कुमारी, डॉ सुशीला सिंह, डॉ कुसुम कुमारी, डॉ नीता शर्मा, डॉ चंचल चरण, डॉ संध्या रानी, डॉ निशी रानी, डॉ जयश्री, डॉ अनिता, सीएसइ की प्रोग्राम मैनेजर स्वाति सिंह सांब्याल, एसबी पंडित, सिटी मैनेजर रविशचंद्र वर्मा सहित कॉलेज की ओर से मोमिता, मंजुला रानी सहित कॉलेज की शिक्षिकाएं और सैकड़ों छात्राएं मौजूद थीं.